स-दक़ा और क़र्ज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "एक शख़्स **जन्नत** में दाख़िल हुवा तो उस ने **जन्नत** के दरवाज़े पर लिखा हुवा देखा कि **स-दक़े का सवाब दस गुना है और क़र्ज़ का अट्ठारह गुना ।**"

(المعجم الکبیر، حدیث ۷۹۷٦، ج۸، ص ۲٤۹)

دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ شैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ा कर्दा म-दनी इन्आ़मात में क़र्ज़ से मु-तअ़ल्लिक़ भी बहुत प्यारा म-दनी इन्आ़म ब सूरते सुवाल मौजूद है **चुनान्चे म-दनी इन्आ़म नम्बर 41** में इर्शाद फ़रमाते हैं : आज आप ने **क़र्ज़** होने की सूरत में (बा वुजूदे इस्तित़ाअ़त) क़र्ज़ ख़्वाह की इजाज़त के बिग़ैर क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर तो नहीं की ? नीज़ किसी से आ़रियतन (आ़रिज़ी त़ौर पर अगर ली हो तो) ली हुई चीज़ ज़रूरत पूरी होने पर मुक़र्ररा मुद्दत के अन्दर वापस कर दी ?

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी
ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 421)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक **जन्नत** में एक दरवाज़ा है जिस का नाम रय्यान है, उस दरवाज़े से सिर्फ़ रोज़ादार दाख़िल होंगे, उन के सिवा कोई दाख़िल न हो सकेगा, जब दूसरे लोग उस में दाख़िल होने की कोशिश करेंगे तो येह दरवाज़ा

www.dawateislami.net

बन्द हो जाएगा और वोह उस में दाख़िल न हो सकेंगे ।''

(مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، حدیث ۱۱۵۲، ص ۵۸۱)

ख़ुल्द में होगा हमारा दाख़िला इस शान से
या रसूलल्लाह का ना'रा लगाते जाएंगे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सय्यिदी व मुर्शिदी, आ़शिक़े रसूले अ़-रबी, मुहि़ब्बे हर सय्यिदो सह़ाबी व वली, सुन्नतों के दाई, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ चन्द दिन के इलावा पूरा साल ही नफ़्ल रोज़े रखते हैं और अपने बयानात व तह़रीरात व इन्फ़िरादी मुलाक़ात में इस की तरग़ीब भी दिलाते रहते हैं चुनान्चे **म-दनी इन्आ़म नम्बर 58** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस हफ़्ते पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी भी दिन) का **रोज़ा** रखा ? नीज़ इस हफ़्ते कम अज़ कम एक दिन खाने में **जव शरीफ़ की रोटी** तनावुल फ़रमाई ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कलिमा, रोज़ा और स-दक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस ने मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **कलिमा** पढ़ा वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा और उस का ख़ातिमा भी कलिमे पर होगा और जिस ने किसी दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **रोज़ा** रखा तो उस का ख़ातिमा भी इसी पर होगा और वोह दाख़िले **जन्नत** होगा और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **स-दक़ा** किया उस का ख़ातिमा भी इसी पर होगा और वोह दाख़िले **जन्नत** होगा ।''

(مُسند امام احمد ج ۹ ص ۹۰ حدیث ۲۳۳۸۴)

www.dawateislami.net

थे गुनह हद से सिवा सगे अ़त्तार के
उन के स-दक़े फिर भी जन्नत मिल गई

र-मज़ान की रातों में नमाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत में है : "जो बन्दए मोमिन **र-मज़ान** की किसी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हर सज्दे के इ़वज़ उस के लिये **पन्दरह सो नेकियां** लिखता है और उस के लिये **सुर्ख़ याक़ूत का एक महल** बनाता है जिस के साठ (60) हज़ार दरवाज़े होते हैं और हर दरवाज़े पर सोने की मुलम्मअ़ कारी या'नी चमक दमक होगी और उस पर सुर्ख़ याक़ूत जड़े होंगे।"

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
है पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 373)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़रे ह़ज व उ़मरह में फ़ौतगी

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमान नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो उस सम्त **ह़ज या उमरह करने निकला फिर रास्ते में ही मर गया** तो उस से कोई सुवाल न किया जाएगा और न ही उस का ह़िसाब होगा और उस से कहा जाएगा कि **जन्नत में दाख़िल हो जा।**"

(المعجم الاوسط، حدیث ٥٣٨٨، ج ٤، ص ١١١)

www.dawateislami.net

मेरी सरकार के क़दमों में ही اِنْ شَآءَاللّٰه

मेरा फ़िरदौस में अ़त्तार ठिकाना होगा

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 185)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुसाफ़िर

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि क़ासिमे ने'मत, मालिके जन्नत, सरापा जूदो सख़ावत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के पेट में **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **का ग़ुबार और जहन्नम का धुवां जम्अ़ नहीं फ़रमाएगा** और जिस के क़दम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के पूरे जिस्म को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा और जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक दिन रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से जहन्नम को तेज़ रफ़्तार सुवार की एक हज़ार साल की मसाफ़त तक दूर फ़रमा देगा और जिसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक ज़ख़्म लगेगा उस पर शु-हदा की मोह़र लगा दी जाएगी, जो क़ियामत के दिन उस के लिये नूर होगी, उस का रंग ज़ा'फ़रान की त़रह़ और ख़ुश्बू मुश्क की त़रह़ होगी, उसे उस मोह़र की वज्ह से अव्वलीन व आख़िरीन पहचान लेंगे और कहेंगे फुलां पर शहीदों की मोह़र लगी हुई है और जो ऊंटनी को दो मर्तबा दोहने के दरमियान के वक़्त तक राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करे उस पर **जन्नत वाजिब हो जाती है ।**"

(مسند احمد، مسند ابی الدرداء، حدیث ۲۷۵۷۳، ج۱۰، ص ٤٢٠)

करम से ख़ुल्द में अ़त्तार जिस दम जा रहा होगा

शयातीं देखते होंगे सभी मुड़ मुड़ के ह़सरत से

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 403)

www.dawateislami.net

आ़लिमे शरीअ़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ का जज़्बा लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वालों से बहुत ख़ुश होते और दुआ़ओं से नवाज़ते हैं चुनान्चे फ़रमाते हैं

अपनी सारी नेकियां अ़त्तार ने कीं उस के नाम
बारह म-दनी क़ाफ़िलों में जो कोई कर ले सफ़र

म-दनी इन्आ़म नम्बर 60 में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस माह जद्वल के मुत़ाबिक़ कम अज़ कम तीन (3) दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र फ़रमाया ? **म-दनी इन्आ़म नम्बर 67 :** क्या आप ने इस साल जद्वल के मुत़ाबिक़ यक-मुश्त तीस (30) **दिन के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र फ़रमाया ? (नीज़ ज़िन्दगी में यक-मुश्त **बारह (12) माह के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की भी निय्यत फ़रमाएं)

दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले ख़ुश नसीब इस्लामी भाइयों की म-दनी बहारों में से एक बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये और हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले की तय्यारी कीजिये चुनान्चे "फ़ैज़ाने सुन्नत" (जिल्द अव्वल तख़्रीज शुदा) में बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि

मां चारपाई से उठ खड़ी हुई !

मेरी अम्मीजान सख़्त बीमारी के सबब चारपाई से उठने तक से मा'ज़ूर हो गई थीं और डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। मैं सुना करता था कि **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों की तरबियत के **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने से दुआ़एं क़बूल होतीं और

www.dawateislami.net

बीमारियां दूर हो जाती हैं। चुनान्चे मैं ने भी दिल बांधा और **दा'वते इस्लामी** के नूर बरसाते आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में "म-दनी तरबियत गाह" ह़ाज़िर हो कर तीन दिन के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र का इरादा ज़ाहिर किया, इस्लामी भाइयों ने निहायत शफ़्क़त के साथ हाथों हाथ लिया, आ़शिक़ाने रसूल की मइ़य्यत में हमारा **म-दनी क़ाफ़िला** बाबुल इस्लाम सिन्ध के **सह़राए मदीना** के क़रीब एक गोठ में पहुंचा, दौराने सफ़र **आ़शिक़ाने रसूल** की ख़िदमात में दुआ़ की दर-ख़्वास्त करते हुए मैं ने अम्मीजान की तश्वीश नाक ह़ालत बयान की, इस पर उन्हों ने अम्मीजान के लिये ख़ूब दुआ़एं करते हुए मुझे काफ़ी दिलासा दिया, अमीरे क़ाफ़िला ने बड़ी नरमी के साथ इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे मज़ीद **30** दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये आमादा किया, मैं ने भी निय्यत कर ली। मैं ने अम्मीजान की सिह़्ह़त याबी के लिये ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ़एं कीं, तीन दिन के इस म-दनी क़ाफ़िले की **तीसरी** रात मुझे एक रोशन चेहरे वाले **बुज़ुर्ग** की ज़ियारत हुई, उन्हों ने फ़रमाया : "अपनी अम्मीजान की फ़िक्र मत करो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह सिह़्ह़त याब हो जाएंगी।" तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले से फ़ारिग़ हो कर मैं ने घर आ कर दरवाज़े पर दस्तक दी दरवाज़ा खुला तो मैं ह़ैरत से खड़े का खड़ा रह गया, क्यूं कि मेरी वोह बीमार अम्मीजान जो कि चारपाई से उठ तक नहीं सकती थीं, उन्हों ने अपने पाउं पर चल कर दरवाज़ा खोला था! मैं ने फ़र्ते मसर्रत से मां के क़दम चूमे और म-दनी क़ाफ़िले में देखा हुवा ख़्वाब सुनाया। फिर मां से इजाज़त ले कर मज़ीद 30 दिन के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना हो गया।

www.dawateislami.net

मां जो बीमार हो क़र्ज़ का बार हो रन्जो ग़म मत करें क़ाफ़िले में चलो
रब के दर पर झुकें इल्तिजाएं करें बाबे रह़मत खुलें क़ाफ़िले में चलो
दिल की कालक धुले मर्ज़ें इस्यां टले आओ सब चल पड़ें क़ाफ़िले चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआन पढ़ने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़ुरआन पढ़ने वाले से कहा जाएगा कि **क़ुरआन पढ़ता जा और जन्नत के द-रजात त़ै करता जा** और ठहर ठहर कर पढ़ जैसा कि तू दुन्या में ठहर ठहर कर पढ़ा करता था तो जहां आख़िरी आयत पढ़ेगा वहीं तेरा ठिकाना होगा।"

(سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب استحبا ب الترتیل فی القراءۃ، حدیث ١٤٦٤، ج٢، ص ١٠٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान ख़त्ताबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی **"मआ़लिमुस्सु-नन"** में फ़रमाते हैं कि "रिवायात में आया है कि क़ुरआन की आयतों की ता'दाद **जन्नत के द-रजात** के बराबर है लिहाज़ा क़ारी से कहा जाएगा कि तू जितनी आयतें पढ़ सकता है उतने द-रजे त़ै करता जा तो जो उस वक़्त पूरा क़ुरआने पाक पढ़ लेगा वोह **जन्नत** के इन्तिहाई द-रजे को पा लेगा और जिस ने क़ुरआन का कोई जुज़ पढ़ा तो उस के सवाब की इन्तिहा क़िराअत की इन्तिहा तक होगी।"

وَاللهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

या नबी अ़त्त़ार को जन्नत में दे अपना जवार
वासित़ा सिद्दीक़ का जो तेरा यारे ग़ार है

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 480)

www.dawateislami.net

जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों के त़लब गार इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से क़ुरआने पाक की ता'लीमात आ़म हो रही हैं । ता दमे तह़रीर कमो बेश **641** मदारिसुल मदीना क़ाइम हो चुके हैं, जिन में पचास हज़ार **(50000)** से ज़ाइद तु-लबा व त़ालिबात ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल कर रहे हैं ।

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दा'वते इस्लामी के इक्तालीस (41) मिनट के मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान में क़ुरआने पाक पढ़ने, पढ़ाने और इन्फ़िरादी त़ौर पर भी इस की तिलावत करने की ताकीद फ़रमाते रहते हैं **म-दनी इन्आ़म नम्बर 3** में इर्शाद होता है : क्या आज आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम एक बार **आ-यतुल कुर्सी, सू-रतुल इख़्लास** और **तस्बीहे फ़ातिमा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पढ़ी ? नीज़ रात में **सू-रतुल मुल्क** पढ़ या सुन ली ? **म-दनी इन्आ़म नम्बर 13** में इर्शाद होता है : क्या आज आप ने **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में पढ़ा या पढ़ाया ? नीज़ मस्जिदे मह़ल्ला की इ़शा की जमाअ़त के वक़्त से दो (2) घन्टे के अन्दर अन्दर घर पहुंच गए ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ल्क़े

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम्हारा गुज़र **जन्नत** की क्यारियों पर से हो तो उस में से कुछ न कुछ चुन लिया करो ।" सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने अ़र्ज़

www.dawateislami.net

किया : "**जन्नत की क्यारियां** क्या हैं ?" फ़रमाया : "**ज़िक्र के हल्क़े** ।" (ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۸۷، حدیث ۳۵۲۱، ج ۵، ص ۳۰٤)

शहा जब ख़ुल्द में आप आगे आगे जाएं उस दम काश !
मैं भी हो जाऊं पीछे पीछे दाख़िल या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 337)

जन्नत की क्यारियों के तलब गार इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी, सूबाई, हफ़्तावार (शबे जुमुआ़, मस्जिद इज्तिमाअ़) और बड़ी रातों के इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में पाबन्दिये वक़्त के साथ अव्वल ता आख़िर शिर्कत की सआ़दत हासिल किया करें, ना सिर्फ़ तन्हा बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों पर भी इन्फ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी साथ लाया करें । मालिके **जन्नत**, क़ासिमे ने'मत, मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े **जन्नत** की बहारें देखना नसीब हो जाएंगी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ । पैकरे इल्मो हिक्मत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दा'वते इस्लामी के इज्तिमाआ़त की तरग़ीब दिलाते रहते हैं चुनान्चे **म-दनी इन्आ़म नम्बर 51** में इर्शाद होता है : क्या आप ने इस हफ़्ते **इज्तिमाअ़** में आग़ाज़ ही से शरीक हो कर (जितना बैठ सकें उतनी देर) दो ज़ानू बैठ कर हत्तल इम्कान निगाहें नीची किये हर बयान, ज़िक्र व दुआ़ और खड़े हो कर सलातो सलाम में शिर्कत और मस्जिद में (बमअ़ हल्क़ा तहज्जुद व नमाज़े फ़ज्र, इशराक़, चाश्त) **सारी रात ए'तिकाफ़** फ़रमाया ? **म-दनी इन्आ़म नम्बर 56** में इर्शाद होता है : क्या आप ने इस हफ़्ते अ़लाक़ाई **मस्जिद इज्तिमाअ़** में कम अज़ कम एक नए इस्लामी भाई को साथ ले जा कर अव्वल ता आख़िर शिर्कत फ़रमाई ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

कलिमाते रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दुखिया दिलों के चैन, सरवरे कौनेन, नानाए ह़-सनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِ وَیُمِیْتُ وَھُوَ الْحَیُّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

कहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे येह कलिमात पढ़ने की वज्ह से **जन्नते नईम में दाख़िल फ़रमाएगा ।"**

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی لا الہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ، حدیث ۱۶۸۲۵، ج ۱۰، ص ۹۵)

तुम्हारा हूं ग़ुलाम और है ग़ुलामी पर मुझे तो नाज़
करम से साथ जन्नत में चलूंगा या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 325)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लाह़ौल शरीफ़ की कसरत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहन्शाहे अबरार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ की कसरत किया करो क्यूं कि येह **जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है ।"**

क़िस्मत में ग़मे दुन्या जन्नत का क़बाला हो
तक़्दीर में लिख्खा हो जन्नत का मज़ा करना

(सामाने बख़्शिश अज़ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दुरूद शरीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस मुसल्मान के पास स-दक़ा करने को कुछ न हो उसे चाहिये कि अपनी दुआ में येह कलिमात कह लिया करे : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ وَصَلِّ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे और रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा, मुअमिनीन और मुअमिनात और मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों पर रह़मत नाज़िल फ़रमा।" क्यूं कि येह ज़कात है और मोमिन कभी ख़ैर (भलाई) से शिकम सैर नहीं होता यहां तक कि **जन्नत** उस का ठिकाना होती है।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبا ن کتا ب الرقائق ،با ب الأدعیہ، رقم ۹۰۰ ،ج۲ ،ص ۱۳۰)

मुन्तज़िर हैं जन्नतें उस के लिये
विर्द है जिस का सनाए मुस्त़फ़ा

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़े मह़रे रिसालत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी तह़रीरात व बयानात और इन्फ़िरादी त़ौर पर भी दुरूदे पाक की कसरत करते और इस की तरग़ीब भी दिलाते रहते हैं और **म-दनी इन्आ़म नम्बर 5** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने अपने **श-जरे** के कुछ न कुछ **अवराद** और कम अज़ कम **313** बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ लिये ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ख़िदमते वालिदैन

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाया : "उस की नाक ख़ाक आलूद हो।" अ़र्ज़ किया गया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! किस की ?" फ़रमाया : "जो अपने **वालिदैन** या उन में किसी एक को बुढ़ापे में पाए और (उन की ख़िदमत कर के) **जन्नत** में दाख़िल न हो सके।"

(صحیح مسلم، کتا ب البر و الصلة ،باب رغم من ادرك ابویه ،حدیث ٦٥١٠ ، ص ١١٢٦)

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 85)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वालिदैन के हुक़ूक़ से मु-तअ़ल्लिक़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला "**समुन्दरी गुम्बद**" मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल कर के पहली फ़ुरसत में इस का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का दिल वालिदैन की ख़िदमत के जज़्बे से सरशार हो जाएगा । आइये ! दा'वते इस्लामी की एक मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" का पेश कर्दा रिसाला "गूंगा मुबल्लिग़" से रिसाला "समुन्दरी गुम्बद" की एक अनोखी बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ 30 जूलाई 2007 सि.ई. बरोज़ पीर शरीफ़ गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों का **सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** जामेअ़ मस्जिद ग़ौसिया

www.dawateislami.net

शैख़ूपूरा (पंजाब) में मुन्अ़क़िद हुवा। उस अ़लाक़े में **गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों** में काम शुरूअ़ हुए ज़ियादा अ़र्सा नहीं हुवा था मगर इस्लामी भाइयों की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से इज्तिमाअ़ में कसीर ता'दाद में गूंगे बहरे इस्लामी भाइयों ने शिर्कत की।

मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**समुन्दरी गुम्बद**" की मदद से इशारों की ज़बान में बयान किया। येह रिसाला वालिदैन की इत़ाअ़त के मौज़ूअ़ पर अपनी मिसाल आप है। वालिदैन की इत़ाअ़त की फ़ज़ीलत और ना फ़रमान औलाद पर अ़ज़ाब का तज़्किरा इशारों की ज़बान में सुन कर गूंगे बहरे इस्लामी भाई आबदीदा हो गए। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़लम के लिखे हुए अल्फ़ाज़ का असर था कि वहां पर मौजूद डीफ़ क्लब का सद्र अपने जज़्बात पर क़ाबू न रख सका। वोह दौराने बयान उठा और मुबल्लिग़ के सीने से लग कर रोने लगा। बहर ह़ाल रिक़्क़त अंगेज़ माह़ोल में बयान जारी रहा। बा'दे इज्तिमाअ़ जब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद होने के लिये नाम लिखने का सिल्सिला हुवा तो ऐसा लग रहा था जैसे हर एक गूंगा चाहता है कि मैं पहले अपने आप को अ़त्तारी रंग में रंग लूं। शु-रकाए इज्तिमाअ़ ने नमाज़ों की पाबन्दी और इज्तिमाआ़त में शिर्कत की निय्यत करने के साथ साथ आयिन्दा ज़िन्दगी इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ में गुज़ारने का भी अ़ज़्म किया। इस इज्तिमाअ़ में मौजूद 4 बद मज़्हब गूंगे बहरों ने भी तौबा की और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर "अ़त्तारी" भी बन गए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सिलए रेह़मी[1]

एक रिवायत में है कि शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "और **रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़मी करो ।**" जब वोह (आने वाला) लौट गया तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं ने उसे जिस चीज़ का हुक्म दिया है अगर येह उस पर अ़मल करे तो **जन्नत** में दाख़िल होगा ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस में **तीन ख़स्लतें** होंगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का ह़िसाब आसानी से लेगा और उसे अपनी रह़मत से **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा ।" सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह ख़स्लतें कौन सी हैं ?" फ़रमाया : "जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े तुम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो, जब तुम येह आ'माल बजा लाओगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें **जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा ।**"

(المستدرك، كتاب التفسير، باب ثلاث من كن فيه...الخ، حديث ٣٩٦٨، ج٣، ص ٣٦٢)

मुफ़्लिसो उन की गली में जा पड़ो
बागे़ ख़ुल्द इकराम हो ही जाएगा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 : सिलए रेह़मी, ज़ुल्म के भयानक अन्जाम और मुसल्मानों का एह़तिराम करने के फ़ज़ाइल वग़ैरा से आगाही ह़ासिल करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**ज़ुल्म का अन्जाम**", "**एह़तिरामे मुस्लिम**" और केसिट बयान "**रिश्तेदारी काटना ह़राम है**" मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल कर के इस्तिफ़ादा कीजिये ।

www.dawateislami.net

बहन बेटियों की परवरिश

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस की **तीन बेटियां या तीन बहनें** हों या **दो बेटियां** या **दो बहनें** हों फिर वोह उन की अच्छी त़रह़ परवरिश करे और उन के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता रहे तो **उस के लिये जन्नत है।**"

(جـامع الترمذی، کتاب البر و الصلة ،حدیث ۱۹۲۳ ، ج ۳ ، ص ۳٦۷)

एक रिवायत में है कि "जिस की तीन बेटियां या तीन बहनें हों और वोह उन के साथ **अच्छा सुलूक** करे तो वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा।"

(جـامع الترمذی ، کتاب البر و الصلة ،باب ماجاء فی النفقة ، حدیث ۱۹۱۹ ، ج ۳ ، ص ۳٦٦)

एक रिवायत में है कि "फिर वोह उन की अच्छी तरबियत करे और उन के साथ अच्छा बरताव करे तो उस के लिये **जन्नत** है।"

(ماخوذ از جامع الترمذی، کتاب البر و الصلة ،باب ماجاء فی النفقة ... الخ،حدیث ۱۹۱۹ ، ج ۳ ، ص ۳٦٦)

बाग़े जन्नत में चले जाएंगे बे पूछे हम
वक़्फ़ है हम से मसाकीन पे दौलत उन की

(ज़ौक़े ना'त, अज़ ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

यतीम की कफ़ालत

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि साहिबे कुरआन, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने **किसी यतीम या मोह़ताज की कफ़ालत की अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा और **जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।**"

(مجمع الزوائد ، کتاب الجنائز،باب تجھیز المیت...الخ،حدیث ٤۰٦٦ ، ج۳ ،ص۱۱٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर दगार, ग़ैबों पर ख़बरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं और **यतीम की कफ़ालत** करने वाला **जन्नत** में इस त़रह़ होंगे।" फिर अपनी शहादत और बीच वाली उंगली की त़रफ़ इशारा करते हुए उन दोनों को खोल दिया।

(صحیح بخاری، کتا ب الادب، حدیث ٦٠٠٥، ج ٤ ص١٠٢)

येह बे ख़टके गुनहगारों का दाख़िल ख़ुल्द में होना
करिश्मा है रसूलुल्लाह की चश्मे करामत का

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ा आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मरीज़ की इयादत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो किसी **मरीज़ की इयादत करता है** या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने किसी इस्लामी भाई से मिलने जाता है तो एक मुनादी उसे मुख़ात़ब कर के कहता है कि "ख़ुश हो जा क्यूं कि तेरा येह चलना मुबारक है और **तूने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है।**"

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی زیارة الاخوان، حدیث ٢٠١٥، ج ٣، ص ٤٠٦)

जिसे चाहें बख़्शें कि ख़ुल्दो जिनां में
ख़ुदा की क़सम दख़्ले सरकार होगा

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی)

साह़िबे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ मरीज़ व दुखिया इस्लामी भाइयों की ग़म ख़्वारी की ताकीद करते हुए

www.dawateislami.net

म-दनी इन्आ़म नम्बर 53 में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़ कम एक मरीज़ या दुखी की घर या अस्पताल जा कर सुन्नत के मुताबिक़ **ग़म ख़्वारी** की ? और उस को तोह़फ़ा (ख़्वाह मक-त-बतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा रिसाला या पेम्फ़लेट) पेश करने के साथ साथ **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के इस्ति'माल का मश्वरा दिया ?

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुलाक़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मक्की म-दनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि **तुम में से कौन जन्नत में जाएगा ?**" हम ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।" फ़रमाया कि "नबी जन्नत में जाएगा, सिद्दीक़ जन्नत में जाएगा और वोह शख़्स भी जन्नत में जाएगा जो मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने किसी भाई से मिलने शहर के मुज़ाफ़ात में जाए।"

(المعجم الاوسط، حدیث ۱۷۴۳، ج۱، ص ۴۷۲)

फ़ेहरिस्त खुली जिस दम जन्नत में पहुंचने की
पहले ही निकल आया नम्बर तेरी उम्मत का

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

किस क़दर सआ़दत मन्द हैं वोह इस्लामी भाई जो अत़राफ़ गाउं में म-दनी क़ाफ़िला, बयान, म-दनी दौरा बराए नेकी की दा'वत, म-दनी मश्वरा और बैनल अक़्वामी या सूबाई इज्तिमाअ़ की दा'वत वग़ैरा के लिये सफ़र इख़्तियार करते हैं नीज़ अपने ह़ल्के़ व अ़लाके़

www.dawateislami.net

वग़ैरा में 12 म-दनी कामों में शरीक हो कर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहते हैं शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : **म-दनी इन्आ़म नम्बर 22 :** क्या आज आप ने कम अज़् कम दो इस्लामी भाइयों को **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए म-दनी क़ाफ़िले व म-दनी इन्आ़मात और दीगर म-दनी कामों की तरग़ीब दिलाई ? **म-दनी इन्आ़म नम्बर 52 :** क्या आप ने इस हफ़्ते इज्तिमाअ़ के फ़ौरन बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए नए नए इस्लामी भाइयों से **मुलाक़ात** का शरफ़ ह़ासिल कर के इन का नाम, पता और फ़ोन नम्बर ह़ासिल किया ? (कम अज़् कम चार से मुलाक़ात और कम अज़् कम एक का पता वग़ैरा ज़रूर लें फिर इन से राबित़ा भी रखें) **म-दनी इन्आ़म नम्बर 61 :** क्या इस माह आप की इन्फ़िरादी कोशिश से कम अज़् कम एक इस्लामी भाई ने **म-दनी क़ाफ़िले** में **सफ़र किया ?** और कम अज़् कम एक ने **म-दनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाया ?**

आइये फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल तख़्रीज शुदा) के बाब **''फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह''** सफ़ह़ा 29 से इन्फ़िरादी कोशिश की बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं :

ड्राइवर पर इन्फ़िरादी कोशिश

एक आ़शिक़े रसूल ने मुझे तह़रीर दी थी उस का ख़ुलासा अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं। दा'वते इस्लामी के म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) में जुम्आ़रात को होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये मुख़्तलिफ़

www.dawateislami.net

अ़लाक़ों से भर कर आई हुई मख़्सूस बसें वापसी के इन्तिज़ार में जहां खड़ी होती हैं वहां से गुज़रा तो क्या देखता हूं कि एक ख़ाली बस में गाने बज रहे हैं और ड्राइवर बैठ कर चरस के कश लगा रहा है। मैं ने जा कर ड्राइवर से महब्बत भरे अन्दाज़ में मुलाक़ात की, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुलाक़ात की ब-रकात फ़ौरन ज़ाहिर हुई और उस ने ख़ुद ब ख़ुद गाने बन्द कर दिये और चरस वाली सिगरेट भी बुझा दी, मैं ने मुस्कुरा कर सुन्नतों भरे बयान की केसिट "**क़ब्र की पहली रात**" उस को पेश की। उस ने उसी वक़्त टेप रेकॉर्डर में लगा दी, मैं भी साथ बैठ कर सुनने लगा कि दूसरों को बयान सुनाने का मुफ़ीद त़रीक़ा येही है कि ख़ुद भी साथ में सुने। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस ने बहुत अच्छा असर लिया। घबरा कर गुनाहों से तौबा की और बस से निकल कर मेरे साथ इज्तिमाअ़ में आ कर बैठ गया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ाजत रवाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मुह़म्मदे म-दनी, रसूले अ़-रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने किसी इस्लामी भाई की **ह़ाजत रवाई** के लिये चलता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के अपनी जगह वापस आने तक उस के हर क़दम पर उस के लिये **70** नेकियां लिखता है और उस के **70** गुनाहों को मिटा देता है। फिर अगर उस के हाथों वोह ह़ाजत पूरी हो गई तो वोह अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे उस दिन था, जिस दिन उस की मां ने उसे जना था और अगर इस दौरान उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह **बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होगा।**"

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین..الخ، حدیث ۱۳، ج ۳، ص ۲٦٤)

www.dawateislami.net

हर वक़्त जहां से कि उन्हें देख सकूं मैं
जन्नत में मुझे ऐसी जगह प्यारे ख़ुदा दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 120)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद अपने दादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم से रिवायत करते हैं कि शाहे ख़ुश ख़िसाल, मह़बूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो शख़्स किसी मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ख़ुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत और तौह़ीद में मसरूफ़ रहता है। जब वोह बन्दा अपनी क़ब्र में चला जाता है तो वोह फ़िरिश्ता उस के पास आ कर पूछता है : "क्या तू मुझे नहीं पहचानता ?" वोह कहता है कि "तू कौन है ?" तो वोह फ़िरिश्ता कहता है कि "**मैं वोह ख़ुशी हूं** जिसे तूने फ़ुलां के दिल में दाख़िल किया था, आज मैं तेरी वह़शत में तुझे उन्स पहुंचाऊंगा और सुवालात के जवाबात में साबित क़दम रखूंगा और तुझे **रोज़े क़ियामत के मनाज़िर** दिखाऊंगा और तेरे लिये **तेरे रब** عَزَّوَجَلَّ **की बारगाह में सिफ़ारिश करूंगा और तुझे जन्नत में तेरा ठिकाना दिखाऊंगा।**"

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلة، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلین، حدیث ۲۳، ج ۳، ص ۲٦٦)

शोर उठा येह महशर में ख़ुल्द में गया सगे अ़त्तार
गर न वोह बचाते तो नार में गया होता

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 : इस मौज़ूअ़ पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के केसिट बयान "**दिल ख़ुश करने के फ़ज़ाइल**" और "**मुश्किल कुशाई की फ़ज़ीलत**" मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल कर के सुनें, बेह़द फ़ाएदा ह़ासिल होगा। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

ग़ुस्सा न करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने ताजदारे रिसालत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : "मुझे ऐसा अ़मल बताइये जो मुझे **जन्नत** में दाख़िल कर दे।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **"ग़ुस्सा मत किया करो तुम्हें जन्नत ह़ासिल हो जाएगी।"** (المعجم الاوسط ،باب الف ،حدیث ۲۳۵۳ ،ج۲، ص ۲۰)

चाहो जिसे फ़िरदौस में जा दो चाहो जिसे दोज़ख़ में भेजो
जन्नतो नार हैं मिल्क तुम्हारी हो मुख़्तार रसूलुल्लाह

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ुस्सा पीना

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो बदला लेने पर क़ादिर होने के बा वुजूद **ग़ुस्सा पी ले अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे लोगों के सामने बुलाएगा ताकि उस को इख़्तियार दे कि **जन्नत की ह़ूरों में से जिसे चाहे पसन्द कर ले।"**

(ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الحلم ،حدیث ٤١٨٦ ،ج٤، ص ٤٦٢)

उठा कर ले गईं ह़ूरें जिनां में
क़दम पर उन के जिस ने जां फ़िदा की

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़फ़्वो दर गुज़र

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब बन्दों

www.dawateislami.net

को हिसाब के लिये खड़ा किया जाएगा तो एक क़ौम अपनी गरदनों पर अपनी तलवारें रखे आएगी और **जन्नत** के दरवाज़े पर आ कर रुक जाएगी। पूछा जाएगा, "येह कौन लोग हैं ?" जवाब मिलेगा, "येह वोह शु-हदा हैं जो ज़िन्दा थे और इन्हें रिज़्क़ दिया जाता था।" फिर एक मुनादी निदा करेगा कि "जिस का सवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है वोह खड़ा हो जाए और **जन्नत में दाख़िल हो जाए।**" फिर दोबारा येही निदा की जाएगी।" हाज़िरीन में से किसी ने पूछा : "वोह कौन हैं जिन का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर होगा ?" म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "लोगों को मुआ़फ़ करने वाले।" (फिर फ़रमाया :) "तीसरी मर्तबा भी येही निदा दी जाएगी कि जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है वोह खड़ा हो जाए और **जन्नत** में दाख़िल हो जाए फिर इतने इतने हज़ार लोग खड़े होंगे और **जन्नत में बिला हिसाब दाख़िल हो जाएंगे।**"

(المعجم الاوسط، باب الف، حديث ١٩٩٨، ج١، ص ٥٤٢)

फ़ातेहे बाबे शफ़ाअ़त के सबब हुक्म मिला
जाएं जन्नत में गदायाने रसूले अ-रबी

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत जमीलुर्रहमान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आफ़्ताबे क़ादिरिय्यत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ज़ाती मुआ-मलात में अफ़्वो दर गुज़र से काम लेते और तहदीसे ने'मत के लिये इर्शाद फ़रमाया करते हैं : "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अपने अन्दर इन्तिक़ाम का जज़्बा नहीं पाता।" काश ! हम से भी बे जा गुस्सा, जज़्बाती पन और अपनी ज़ात की ख़ातिर इन्तिक़ाम लेने की आ़दते बद निकल जाए।

माहताबे र-ज़विय्यत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **म-दनी इन्आ़म नम्बर 28** में फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने (घर में या

www.dawateislami.net

बाहर) किसी पर ग़ुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध कर **ग़ुस्से का इलाज** फ़रमाया या बोल बड़े ? नीज़ **दर गुज़र** से काम लिया या इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेने) का मौक़अ ढूंडते रहे ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन मुबारक ख़स्लतें

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "तीन ख़स्लतें जिस में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा और उसे अपनी **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा, (1) कमज़ोरों पर **रह़म** करना (2) वालिदैन पर **शफ़क़त** करना (3) हुक्मरानों के साथ **भलाई** करना।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الرفق، حدیث ۱۰، ج۳، ص ۲۷۹)

हुक्म होगा कि उसे दाख़िले जन्नत कर दो
जिस के दिल में है तमन्नाए रसूले अ़-रबी

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पर्दा पोशी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर सरापा नूर, शाहे ग़ुयूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने किसी भाई के किसी ऐ़ब को देख ले और उस की पर्दा पोशी करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस पर्दा पोशी की वज्ह से **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा।"

(المعجم الکبیر مسند عُقْبَة بن عامر، حدیث ۷۹۵، ج۱۷، ص ۲۸۸)

www.dawateislami.net

दाख़िले ख़ुल्द किये जाएंगे अहले इस्यां

जोश पर आएगी जब शाने रसूले अ़-रबी

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने भाई की **पर्दा पोशी** करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की **पर्दा पोशी** फ़रमाएगा और जो अपने भाई के राज़ खोलेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के राज़ ज़ाहिर कर देगा यहां तक कि वोह अपने घर ही में रुस्वा हो जाएगा।" (سنن ابن ماجه، کتاب الحدود ،باب الستر علی المومن ،حدیث ٢٥٤٦، ج٣ ،ص ٢١٩)

क्यूं रोकते हो ख़ुल्द से मुझ को मलाएका

अच्छा चलो तो शाफ़ेए महशर के सामने

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐ काश ! **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला हमारे ऐ़बों पर अपनी सत्तारी की चादर डाल कर बरोज़े क़ियामत सारी मख़्लूक़ के सामने हमें रुस्वाई से बचा ले और महज़ अपने फ़ज़्लो करम से अपनी **जन्नत** में दाख़िल फ़रमा दे।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

आ़लिमे शरीअ़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमें गुनाहों के मरज़ से नजात दिला कर नेक बनाना चाहते हैं चुनान्चे **म-दनी इन्आ़म नम्बर 42** में इर्शाद फ़रमाते हैं : आज आप ने किसी मुस्लमान के उ़यूब पर मुत्तलअ़ हो जाने पर उस की **पर्दा पोशी** फ़रमाई या (बिला

www.dawateislami.net

मस्लहते शर–ई) उस का ऐब ज़ाहिर कर दिया ? नीज़ किसी की राज़ की बात (बिग़ैर उस की इजाज़त) दूसरे को बता कर **ख़ियानत** तो नहीं की ?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मीठे मीठे मुस्त़फ़ा, सुल्त़ाने अम्बिया, ह़बीबे किब्रिया صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी से महब्बत करे और उसे बता दे कि मैं तुझ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करता हूं तो वोह **दोनों जन्नत में दाख़िल होंगे** फिर अगर महब्बत करने वाला बुलन्द मर्तबे में होगा तो जिस से वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के लिये महब्बत करता था** उसे उस के साथ मिला दिया जाएगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب المتحابین فی اللہ ،حدیث ۱۸۰۱۵، ج۱۰، ص ۴۹۶)

ज़हे क़िस्मत इशारा पा के उन की चश्मे रह़मत का
ग़ुलामों को लुभा कर ले चली जन्नत मुह़म्मद की

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र–ज़वी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सलाम आ़म करना

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**रह़मान** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो और सलाम को आ़म करो और खाना खिलाओ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।"

(الاحسان بترتیب ابن حبان ، کتاب البر والاحسان ،باب افشاء السلام، حدیث ۴۸۹، ج۱، ص ۳۵۶)

www.dawateislami.net

नबी के नाम लेवा आने वाले हैं थके हारे
सजाई जाती है इस वासिते जन्नत मुहम्मद की

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत जमीलुर्रहमान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घर में भी सलाम करना

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन में से हर एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, पहला वोह शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद के लिये निकले, वोह मरने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उसे **जन्नत में दाख़िल फ़रमाए** या अज्रो सवाब के साथ वापस लौटाए दूसरा वोह शख़्स जो मस्जिद की त़रफ़ जाए वोह मरने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उसे **जन्नत में दाख़िल फ़रमाए** या अज्रो सवाब के साथ वापस लौटाए, और तीसरा वोह शख़्स जो अपने **घर में सलाम** करते हुए दाख़िल हो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है।" (السنن الکبری ج۹ص۲۸۰)

पहले ही ख़ुदा हुक्म क़ियामत में येह देगा
जन्नत में चले जाएं गदायाने मुहम्मद

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत जमीलुर्रहमान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي)

सलामती के घर या'नी **जन्नत** के त़लब गार इस्लामी भाइयो ! मुसन्निफ़े फ़ैज़ाने सुन्नत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **सलाम को आ़म** करने की ताकीद करते हुए **म-दनी इन्आ़म नम्बर 6** में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने घर, दफ़्तर, बस, ट्रेन वग़ैरा में आते जाते

www.dawateislami.net

और गलियों से गुज़रते हुए राह में खड़े या बैठे हुए **मुसल्मानों को सलाम** किया ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस्लाही बयानात और म-दनी मुज़ा-करों के केसिट वक़्तन फ़ वक़्तन घर में सुनते, सुनाते रहें, म-दनी माह़ोल बनता चला जाएगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने घर में म-दनी माह़ोल बनाने के लिये उन्नीस (19) म-दनी फूल अ़त़ा फ़रमाए हैं, इन्हें मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और इन के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के घर में म-दनी माह़ोल बनाइये :

"या रब्बे करीम ! हमें मुत्तक़ी बना"
के उन्नीस (19) हुरूफ़ की निस्बत से
घर में म-दनी माह़ोल बनाने के उन्नीस म-दनी फूल

﴾1﴿ घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये । ﴾2﴿ वालिदा या वालिद साह़िब को आते देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाइये । ﴾3﴿ दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साह़िब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाउं चूमा करें । ﴾4﴿ वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, इन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बातचीत कीजिये । ﴾5﴿ इन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शर-अ़ न हो फ़ौरन कर डालिये । ﴾6﴿ सन्जी-दगी अपनाइये । घर में तू तुकार, अबे तबे और मज़ाक़ मस्ख़री करने, बात बात पर ग़ुस्से हो जाने, खाने में ऐ़ब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझ़ने, बह़सें करते रहने की अगर आप की आ़दतें हों तो अपना रवय्या

www.dawateislami.net

यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लीजिये। ﴾7﴿ घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ घर के अन्दर भी ज़रूर इस की ब-र-कतें ज़ाहिर होंगी। ﴾8﴿ मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी "आप" कह कर ही मुख़ातिब हों। ﴾9﴿ अपने महल्ले की मस्जिद में इ़शा की जमाअ़त के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये। काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त) मुयस्सर आए और फिर कामकाज में भी सुस्ती न हो। ﴾10﴿ घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिल्सिला हो और आप अगर सर-परस्त नहीं हैं, नीज़ ज़न्ने ग़ालिब है कि आप की नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका टोक के बजाए, सब को नरमी के साथ मक-त-बतुल मदीना से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ऑडियो केसिटें, ऑडियो/विडियो सीडीज़ सुनाइये दिखाइये, म-दनी चेनल दिखाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ "म-दनी नताइज" बरआमद होंगे। ﴾11﴿ घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, सब्र सब्र और सब्र कीजिये। अगर आप ज़बान चलाएंगे तो "म-दनी माहोल" बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बे जा सख़्ती करने से बसा अवक़ात शैतान लोगों को ज़िद्दी बना देता है। ﴾12﴿ म-दनी माहोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ येह भी है कि घर में रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर ज़रूर दीजिये या सुनिये। ﴾13﴿ अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिलसोज़ी के साथ दुआ़ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

www.dawateislami.net

اَلدُّعَآءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِن या'नी दुआ मोमिन का हथियार है। (المستدرك للحاكم ج۲ ص۱٦۲ حديث۱۸۰۵) ﴾14﴿ सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए़ शर-ई न हो। हां येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि बहू सुसर के हाथ पाउं न चूमे, यूंही दामाद सास के। ﴾15﴿ **मसाइलुल क़ुरआन** सफ़ह़ा **290** पर है : हर नमाज़ के बा'द येह दुआ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में म-दनी माह़ोल क़ाइम होगा। (दुआ येह है :) (اَللّٰهُمَّ) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾ (1) (پ۱۹،الفرقان ۷۴) ("اَللّٰهُمَّ" आयते क़ुरआनी का ह़िस्सा नहीं) ﴾16﴿ ना फ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो **11** या **21** दिन तक उस के सिरहाने खड़े हो कर येह आयते मुबा-रका सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़िये कि उस की आंख न खुले : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿۲۱﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿۲۲﴾ (2) (پ۳۰،البروج:۲۱،۲۲) (अव्वल, आख़िर, एक मर्तबा दुरूद शरीफ़) याद रहे ! बड़ा ना फ़रमान हो तो सोते सोते सिरहाने वज़ीफ़ा पढ़ने में उस के जागने का अन्देशा है ख़ुसूसन जब कि उस की नींद गहरी न हो, येह पता चलना मुश्किल है कि सिर्फ़ आंखें बन्द हैं या सो रहा है लिहाज़ा जहां फ़ितने का ख़ौफ़ हो वहां येह अ़मल न किया जाए ख़ास कर बीवी

مدينه

1 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों के ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेश्वा बना।

2 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला क़ुरआन है लौहे़ मह़फ़ूज़ में।

www.dawateislami.net

अपने शोहर पर येह अ़मल न करे। ﴾17﴿ नीज़ ना फ़रमान औलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़ज्र के बा'द आस्मान की त़रफ़ रुख़ कर के "یَاشَهِیْدُ" **21** बार पढ़िये। (अव्वल व आख़िर, एक बार दुरूद शरीफ़)। ﴾18﴿ म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़-मल की आ़दत बनाइये और घर के जिन अफ़राद के अन्दर नर्म गोशा पाएं उन में और आप अगर बाप हैं तो औलाद में नरमी और ह़िक्मते अ़-मली के साथ म-दनी इन्आ़मात का निफ़ाज़ कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से घर में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा। ﴾19﴿ पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के घर वालों के लिये भी दुआ़ कीजिये। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से भी घरों में म-दनी माह़ोल बनने की "म-दनी बहारें" सुनने को मिलती हैं।

(नेकी की दा'वत, स. 192)

नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू कसीर सुह़ैमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि मुझे ऐसा अ़मल बताइये कि जब बन्दा उसे करे तो **जन्नत** में दाख़िल हो जाए।" उन्हों ने फ़रमाया : "जब मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में येही सुवाल किया था तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि "वोह बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत पर ईमान ले आए।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ईमान के साथ कोई अ़मल भी इर्शाद फ़रमाइये।"

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये हुए रिज़्क़ में से कुछ न कुछ **स-दक़ा** करे।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर वोह फ़क़ीर हो और स-दक़े की इस्तिता़अ़त न रखता हो तो क्या करे ?" फ़रमाया : "**वोह नेकी का हुक्म दे और बुरी बात से मन्अ़ करे ।**" मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर वोह बोलने में अटक्ता हो, नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने की इस्तिता़अ़त न हो तो ?" फ़रमाया कि "**जाहिल को इल्म सिखाए ।**" मैं ने अ़र्ज़ किया : "अगर वोह ख़ुद जाहिल हो तो ?" फ़रमाया : "**मज़लूम की मदद करे ।**" मैं ने अ़र्ज़ किया : "अगर वोह कमज़ोर हो और मज़लूम की मदद करने पर क़ादिर न हो तो ?" फ़रमाया कि "तुम अपने दोस्त में जो भलाई चाहते हो वोह येह है कि वोह लोगों को **ईज़ा देना छोड़ दे ।**" मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर वोह येह अ़मल करेगा तो **जन्नत** में दाख़िल हो जाएगा ?" फ़रमाया कि "जो मुसल्मान इन आ'माल में से कोई एक अ़मल भी करेगा **येह अ़मल ख़ुद उस का हाथ पकड़ कर उसे जन्नत में दाख़िल करेगा ।**"

(الترغیب والترھیب، کتاب الحدود، باب الترغیب فی الامر بالمعروف ... الخ، حدیث ۲۰، ج ۳ ص ۱۶۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़मिले क़ुरआनो सुन्नत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमा वक़्त ज़बान व क़लम के ज़रीए, तदबीरो हिक्मत, नरमी व शफ़्क़त, उल्फ़तो मवद्दत के साथ नेकी की दा'वत देते और बुराई से मन्अ़ करने की सअ़्य करते रहते हैं चुनान्चे **म-दनी इन्आ़म नम्बर 12 :** क्या आज आप ने **फ़ैज़ाने सुन्नत से दो (2) दर्स** (मस्जिद, घर, दुकान, बाज़ार वग़ैरा जहां सहूलत हो) दिये या सुने ?

म-दनी इन्आ़म नम्बर 23 : क्या आज आप ने दा'वते इस्लामी के

www.dawateislami.net

म-दनी कामों (म-सलन इन्फ़िरादी कोशिश, दर्सो बयान, मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान वग़ैरा) पर कम अज़ कम **दो (2) घन्टे** सर्फ़ किये ?

म-दनी इन्आ़म नम्बर 54 : क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़ कम एक बार **म-दनी दौरा बराए नेकी की दा'वत** में शिर्कत फ़रमाई ?

सफ़े मातम उठे ख़ाली हो ज़िन्दां टूटें ज़न्जीरें
गुनहगारो चलो मौला ने दर खोला है जन्नत का

(हदाइक़े बख़्शिश, अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाबीना पन पर सब्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जब मैं अपने बन्दे को आंखों के मुआ़-मले में आज़माऊं फिर वोह सब्र करे तो मैं उस की आंखों के इ़वज़ उसे जन्नत अ़त़ा फ़रमाऊंगा ।"

(صحیح البخاری ، کتاب المرضی ، باب فضل من ذهب بصره ،حدیث ٥٦٥٣ ، ج٤ ،ص ٦)

एक रिवायत में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि "जब मैं अपने बन्दे की आंखें दुन्या में ले लूं तो **जन्नत** के इ़लावा कोई चीज़ उस का बदला न होगा ।"

(الترغیب والترهیب، کتاب الجنائز ، باب الترغیب فی الصبر ...الخ ،حدیث ٨٦ ، ج٤ ، ص ١٥٤)

एक रिवायत में है कि "मैं जिस की आंखें ले लूं फिर वोह उस पर सब्र करे और अज्र की उम्मीद रखे तो मैं उस के लिये **जन्नत के इ़लावा किसी सवाब पर राज़ी न होउंगा ।**"

(الترغیب والترهیب، کتاب الجنائز ، باب الترغیب فی الصبر ...الخ ،حدیث٨٧ ، ج٤ ، ص ١٥٤)

www.dawateislami.net

ऐ ज़हे रह़मत सियह काराने उम्मत के लिये

हो गई आरास्ता जन्नत रसूलुल्लाह की

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" के 100 से ज़ाइद शो'बाजात में से एक शो'बा "**गूंगे बहरे और नाबीना**" इस्लामी भाइयों में नेकी की दा'वत आ़म करने और इन्हें दीन के ज़रूरी अह़काम से रू शनास कराने के लिये क़ाइम किया गया है जो कि मजलिसे "**ख़ुसूसी इस्लामी भाई**" के तह़्त है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता उ़मूमी और ख़ुसूसी (गूंगे बहरे और नाबीना) इस्लामी भाई 30 दिन का तरबियती कोर्स कर के क़ुव्वते गोयाई और समाअ़त से मह़रूम अफ़राद तक नेकी की दा'वत पहुंचाने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं। इन के म-दनी क़ाफ़िले भी शहर ब शहर सफ़र करते हैं। आइये ! म-दनी क़ाफ़िले की एक बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये जिस में ख़ुसूसी इस्लामी भाई भी शरीके सफ़र थे चुनान्चे

बाबुल मदीना कराची 2007 सि.ई. में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले **नाबीना इस्लामी भाइयों** का एक **म-दनी क़ाफ़िला** मत़लूबा मस्जिद तक पहुंचने के लिये बस में सुवार हुवा। उस म-दनी क़ाफ़िले में चन्द उ़मूमी इस्लामी भाई भी शामिल थे। अमीरे क़ाफ़िला ने बराबर बैठे शख़्स पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उस का नाम वग़ैरा मा'लूम

किया तो वोह कहने लगा कि "मैं **ईसाई मज़हब** से तअ़ल्लुक़ रखता हूं, मैं ने मज़्हबे इस्लाम का मुता-लआ़ किया है और इस मज़हब से **मु-तअस्सिर** भी हूं, मगर फ़ी ज़माना मुसल्मानों का बिगड़ा हुवा किरदार मेरे इस्लाम क़बूल करने में रुकावट है। मगर मैं देख रहा हूं कि आप लोग एक जैसे (सफ़ेद) लिबास में मल्बूस हैं। बस में चढ़े और बुलन्द आवाज़ से सलाम किया और हैरानगी तो इस बात की है कि आप के साथ नाबीना अश्ख़ास ने भी सर पर सब्ज़ इमामा और सफ़ेद लिबास को अपना रखा है, इन सब के चेहरों पर दाढ़ी भी है।"

उस की गुफ़्त-गू सुनने के बा'द **अमीरे क़ाफ़िला** ने उसे मुख़्तसर तौर पर "**मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई**" के बारे में बताया। फिर शैख़े त़रीक़त, अमीरे **अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दीने इस्लाम के लिये की जाने वाली अ़ज़ीम ख़िदमात का तज़्किरा किया और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहौल का तआ़रुफ़ भी कराया। फिर उस से कहा कि "येह नाबीना इस्लामी भाई उन्ही दुन्यादार मुसल्मानों (जिन्हें देख कर आप इस्लाम क़बूल करने से कतराते रहे हैं) की इस्लाह़ के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हुए हैं।" **येह बात सुन कर वोह इतना मु-तअस्सिर हुवा कि कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मानों से तक्लीफ़ दूर करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि रास्ते में पड़ा हुवा एक दरख़्त लोगों को तक्लीफ़ देता था। एक शख़्स ने उसे लोगों के रास्ते से हटा दिया तो मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मैं ने उसे

www.dawateislami.net

जन्नत में उस दरख़्त के साए में लैटे हुए देखा है।"

(مسند احمد بن حنبل ،مسند أنس بن مالك ،حديث ١٢٥٧٢ ،ج٤ ،ص ٣٠٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो दाग़े इश्क़े शहे दीं हैं दिल पे खाए हुए
वोह गोया ख़ुल्दे बरीं की सनद हैं पाए हुए

(क़बालए बख़्शिश, अज़ ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى)

ह़लाल कमाना और कारे सवाब में ख़र्च करना

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि "दुन्या मीठी और सर सब्ज़ है, जिस ने इस में से **ह़लाल त़रीक़े से कमाया और उसे कारे सवाब में ख़र्च किया, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और **अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा** और जिस ने ह़राम त़रीक़े से कमाया और उसे नाह़क़ ख़र्च किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये ज़िल्लतो ह़क़ारत के घर को ह़लाल कर देगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के माल में ख़ियानत करने वाले बहुत से लोगों के लिये क़ियामत के दिन जहन्नम होगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 15, **सूरए बनी इसराईल** आयत 97 के आख़िरी जुज़ में इर्शाद फ़रमाता है :

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे।

(شعب الا يمان ، باب فى قبض اليد عن الاموال المحرمة حديث ٥٥٢٧، ج ٤ ، ص ٣٩٦)

बिशारत मिले काश ! जन्नत की फ़ौरन
क़ियामत के दिन जूं ही अ़त्तार आए

(मुग़ीलाने मदीना, अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

क़र्ज़ के तक़ाज़े में नरमी

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़रीदो फ़रोख़्त, क़र्ज़ अदा करने और क़र्ज़ का मुत़ा-लबा करने में नरमी करने वाले **एक शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया ।**"

(سنن النسائی ،کتاب البیوع، باب حسن المعاملة والرفق ،ج۷، ص ۳۱۹)

रह़मते किर्दिगार عَزَّوَجَلَّ के उम्मीद वार और बहारे **जन्नत** के त़लब गार इस्लामी भाइयो ! ज़हे नसीब ! हम क़र्ज़ के तक़ाज़े में नरमी और अदाएगी में जल्दी करने वाले बन जाएं । आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा, मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **म-दनी इन्आ़म नम्बर 41** में इर्शाद फ़रमाते हैं : आज आप ने क़र्ज़ होने की सूरत में (बा वुजूदे इस्तित़ाअ़त) क़र्ज़ ख़्वाह की इजाज़त के बिग़ैर क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर तो नहीं की ? नीज़ किसी से आ़रियतन (आ़रिज़ी त़ौर पर अगर ली हो तो) ली हुई चीज़ ज़रूरत पूरी होने पर मुक़र्ररा मुद्दत के अन्दर वापस कर दी ?

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी
ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 85)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़िना से बचना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरवरे कौनैन, रह़मते दारैन, राह़ते क़ल्बे बेचैन, नानाए ह़-सनैन

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **जिसे दो दाढ़ों के दरमियान** वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और दो टांगों के **दरमियान** वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) के शर से बचा ले **वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।**"

(ترمذی، کتاب الزھد، باب حفظ اللسان، حدیث ٢٤١٧، ج٤، ص ١٨٤)

एक रिवायत में है कि ऐ कुरैश के जवानो ! **ज़िना मत करना** क्यूं कि जिस की जवानी बे दाग़ होगी **वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।**

(الترغیب والترھیب ، کتاب الحدود ، باب من الزنا، حدیث ٤١، ج٣، ص ١٩٤)

कर दे जन्नत में तू जवार उन का
अपने अ़त्तार को अ़ता या रब

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़बशी चीख़ें मार कर रोने लगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं ।"

(پ ٢٨، سُورَۃُ التَّحْرِیم:٦)

इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया कि "जहन्नम की आग को एक हज़ार साल तक जलाया गया यहां तक कि वोह सुर्ख़ हो गई, फिर एक हज़ार साल तक जलाया गया यहां तक कि वोह सफ़ेद हो गई, फिर उसे एक हज़ार साल तक जलाया गया तो वोह सियाह हो गई तो अब जहन्नम काली सियाह है उस के शो'ले नहीं बुझते । येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने एक

www.dawateislami.net

ह़बशी चीख़ें मार कर रोने लगा तो ह़ज़रते जिब्रईल अमीन عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल हुए और अ़र्ज़ किया कि "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने रोने वाला शख़्स कौन है ?" फ़रमाया कि "ह़बशा का एक शख़्स है।" और फिर उस शख़्स की ता'रीफ़ बयान फ़रमाई तो जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल और इरतिफ़ाअ़ फ़ौक़ल अ़र्श होने की क़सम ! मेरे ख़ौफ़ के सबब जिस बन्दे की आंख रोएगी, मैं जन्नत में उस की हंसी में इज़ाफ़ा फ़रमाऊंगा।"

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، حدیث ۷۹۹، ج۱، ص ٤٨٩)

नारे जहन्नम से तू बचाना ख़ुल्दे बरीं में मुझ को बसाना
या रब अज़ पए शाहे मदीना या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 121)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से हर वक़्त डरते रहने चाहिये। **अल्लाह** तआ़ला बे नियाज़ है जहां वोह आ'माले सालिह़ा म-सलन सलाम को आ़म करना, अहलो इ़याल को खिलाना पिलाना, इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना, इ़बादात बजा लाना, झगड़ा तर्क करना, रिज़्क़े ह़लाल कमाना, सुन्नतें अपनाना, बा वुज़ू रहना, तह़िय्यतुल वुज़ू और तह़िय्यतुल मस्जिद अदा करना, नफ़्ली नमाज़ व रोज़ा की कसरत करना, अज़ानो इक़ामत कहना और इन का जवाब देना, सफ़ के ख़ला को पुर करना, उस की रिज़ा के लिये मस्जिद बनाना, नमाज़े तहज्जुद व इशराक़ व चाश्त व अव्वाबीन अदा करना,

www.dawateislami.net

मरीज़ की इयादत, किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़ियत करना, नमाज़े जनाज़ा पढ़ना, ब ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ नमाज़े पन्जगाना बा जमाअ़त पढ़ना, नमाज़े जुमुआ़ अदा करना, कलिमए त़य्यिबा पढ़ना, लाहौल शरीफ़ की कसरत करना, बच्चों की फ़ौतगी पर सब्र करना, ज़कात देना, अमानत लौटाना, शर्मगाह, पेट और ज़बान की हिफ़ाज़त करना, किसी से कुछ न मांगना, किसी मुसल्मान को लिबास पहनाना, खाना खिलाना, स-दक़ा व क़र्ज़ देना, माहे र-मज़ान के और नफ़्ल रोज़े रखना, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ज़ख़्म सहना, क़ुरआन पढ़ना पढ़ाना, ज़िक्र के ह़ल्क़ों म-सलन सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत करना, ज़िक्रो अज़्कार करना, वालिदैन की ख़िदमत और रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़मी करना, बेटियों, बहनों और मोह़ताज व यतीम की कफ़ालत व परवरिश करना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुलाक़ात और अपने इस्लामी भाइयों की ह़ाजत रवाई व मुश्किल कुशाई करना, मुसल्मानों के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करना, अच्छी आ़दात अपनाना, सच बोलना, वा'दा वफ़ा करना, निगाहें नीची रखना, ग़ुस्सा पीना, लोगों को मुआ़फ़ करना, कमज़ोरों पर रह़म करना, किसी के ऐबों पर मुत्त़लअ़ होने पर पर्दा पोशी करना, उस के राज़ छुपाना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करना, नेकी की दा'वत देना, बुराई से मन्अ़ करना, जाहिल को इ़ल्म सिखाना, मज़लूम की मदद करना, ईज़ा रसानी से बचना, लोगों से तक्लीफ़ दूर करना, ख़रीदो फ़रोख़्त और क़र्ज़ के तक़ाज़े में नरमी करना, ज़िना से बचना वग़ैरा पर अपनी रह़मत से **जन्नत** अ़ता फ़रमाता है, वहीं गुनाहों के सबब **जन्नत** के दाख़िले से रोक भी लेता है चुनान्चे एक इ़ब्रत अंगेज़ रिवायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये,

www.dawateislami.net

सवाब से महरूमी

हज़रते अ़दी बिन हातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन लोगों में से कुछ लोगों को जन्नत की त़रफ़ जाने का हुक्म दिया जाएगा, जब वोह लोग **जन्नत** के क़रीब पहुंच जाएंगे और उस की खुश्बूओं को सूंघ लेंगे और उस के महल्लों और जन्नतियों के लिये जो ने'मतें तय्यार की गई हैं उन को देख लेंगे तो निदा की जाएगी "इन को जन्नत से हटा दो, इन के लिये जन्नत में कोई हिस्सा नहीं है" वोह इतनी ह़सरत से **जन्नत** से लौटेंगे कि पहले इतनी ह़सरत से कोई नहीं लौटा था वोह कहेंगे कि ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ अगर तू हम को **जन्नत** और अपने सवाब को दिखाने और तूने अपने दोस्तों के लिये जो ने'मतें तय्यार की हैं, उन को हमें दिखाने से पहले दोज़ख़ में दाख़िल कर देता तो येह हमारे लिये बहुत आसान होता। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : मैं ने तुम्हारे साथ येही इरादा किया था जब तुम ख़ल्वत में होते थे तो मेरे सामने बड़े बड़े गुनाह करते थे और जब तुम लोगों से मिलते तो इन्तिहाई तक़्वा व परहेज़ गारी के साथ मिलते तुम लोगों को उस के ख़िलाफ़ दिखाते जो तुम्हारे दिलों में मेरे लिये ख़याल था। तुम लोगों से डरते थे और मुझ से न डरते थे, तुम लोगों को बुज़ुर्ग समझते थे, मुझे बड़ा नहीं जानते थे। तुम ने लोगों की ख़ातिर बुरे काम तर्क किये और मेरी ख़ातिर नहीं किये, आज मैं तुम को सवाब से महरूम करने के साथ साथ दर्दनाक अ़ज़ाब चखाऊंगा।

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، ج ۱۰ ص ۳۷۷، رقم ۱۷۶۴۹)

اَلْاَمَانُ وَالْحَفِیْظ

www.dawateislami.net

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब
इ़ज़्न से तेरे सरे ह़श्र कहें काश ! हुज़ूर
साथ अ़त्तार को जन्नत में रखूंगा या रब

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जन्नत के मह़ल्लात ह़ासिल करने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना **सईद बिन मुसय्यब** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने قُلْ ھُوَ اللہُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) को **10** बार पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये **जन्नत में मह़ल** बनाता है जिस ने **20** बार पढ़ा उस के लिये **दो मह़ल** बनाता है जिस ने **30** बार पढ़ा उस के लिये **तीन मह़ल** बनाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त हमारे **बहुत से मह़ल्लात होंगे ?** इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल इस से भी ज़ियादा वसीअ़ है।**

(ग़ीबत की तबाह कारियां स. 133 ब ह़वाला

(سنن دارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل قل ھو اللّٰہ احد، الحدیث: ۳۴۲۹، ج۲، ص ۵۵۱

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

(۱)	قران مجید	کلام باری تعالیٰ	ضیاء القران پبلی کیشنز لاہور
(۲)	کَنْزُالْاِیْمَان فِیْ تَرجَمَۃِالْقُرْاٰن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القران پبلی کیشنز لاہور
(۳)	خزائن العرفان	سید نعیم الدین مراد آبادی متوفّٰی ۱۳۲۷ھ	ضیاء القرآن کراچی
(۴)	صَحِیْحُ الْبُخَارِی	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۵)	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشیری متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت
(۶)	سُنَنُ اَبِیْ دَاوٗد	امام ابوداود سلیمان بن اشعث متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی
(۷)	سُنَن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی متوفّٰی ۲۸۹ھ	دار الفکر بیروت
(۸)	سنن نسائی	امام ابوعبدالرحمٰن احمد بن شعیب النسائی متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
(۹)	سُنَنُ ابنِ ماجه	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید القزوینی متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار الفکر بیروت
(۱۰)	صحیح ابن حبان	الحافظ محمد بن حبان متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۱)	المستدرك عَلَى الصَّحِيْحَيْن	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ نیشاپوری متوفّٰی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت
(۱۲)	اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر	امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی
(۱۳)	اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط	امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۴)	فِرْدَوْسُ الْاَخْبَار	حافظ شیرویہ بن شہردار دیلمی متوفّٰی ۵۰۹ھ	دار الفکر بیروت
(۱۵)	مَجْمَعُ الزَّوَائِد	حافظ نور الدین علی بن ابوبکر ہیثمی متوفّٰی ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت
(۱۶)	شُعَبُ الْاِیْمَان	امام احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
(۱۷)	اَلْمُسْنَدُ لِلْاِمَامِ اَحْمَد بْنِ حنبل	امام احمد بن حنبل متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
(۱۸)	ابن خزیمة	امام ابوبکر محمد بن اسحاق متوفّٰی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی بیروت
(۱۹)	الترغیب والترھیب	امام عبدالعظیم بن عبدالقوی متوفّٰی ۶۵۶ھ	دار الفکر بیروت
(۲۰)	الشفاء	قاضی ابوالفضل عیاض متوفّٰی ۵۴۴ھ	ملتان
(۲۱)	عیون الحکایات	عبدالرحمٰن بن الجوزی متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
(۲۲)	منهاج العابدين	امام محمد بن محمد الغزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
(۲۳)	مکاشفة القلوب	امام محمد بن محمد الغزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
(۲۴)	تنبیه الغافلین	امام المواہب عبدالمواہب متوفّٰی ۹۷۳ھ	دار الفکر بیروت
(۲۵)	حدائقِ بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
(۲۶)	ذوقِ نعت	مولانا حسن رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	کراچی
(۲۷)	سامانِ بخشش	مفتیٔ اعظم ہند مولانا مصطفےٰ رضا خان	کراچی
(۲۸)	قبالۂ بخشش	خلیفہ اعلیٰ حضرت جمیل الرحمٰن	کراچی
(۲۹)	مکتوب امیر اہلسنّت	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
(۳۰)	وسائلِ بخشش (مرمم)	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
(۳۱)	نیکی کی دعوت	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
(۳۲)	وزن کم کرنے کا طریقہ	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی

www.dawateislami.net